Lecture-3

Topic-Institutional approach to the study of Comparative politics

Degree-II(Sub.)

Date-26-6-2021

By Rahul Kumar Jha
Dept.of Pol.Science

तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के दृष्टिकोण :-

संस्थागत उपागम की विशेषताएँ :—

आदर्शवादी अध्ययन - परंपरागत विद्वानों की एक विशेषता यह रही है कि उन्होंने कुछ संस्थाओं को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए वे दो दलीय प्रथा से बड़े प्रभावित दिखते हैं। ज्यादातर लेखकों की मान्यता यह रही है कि लोकतंत्र वहीं सफल होगा जहां दो राजनीतिक दल होंगे। दो दल होने से यह लाभ है कि सदन स्वेच्छाचारी और निरंकुश होने से बचता है।

(v) मुख्यतः कानूनी, औपचारिक व संस्थागत अध्ययन :- संस्थागत अध्ययन मुख्यतः किसी द्वारा निर्मित औपचारिक संस्थाओं से संबंधित था। संविधान द्वारा निर्मित संस्थाओं की उत्पत्ति, स्वरूप, प्रकृति व कार्यप्रणाली का परंपरागत विद्वानों ने अध्ययन किया।

तुलनात्मक राजनीति के संस्थागत उपागम की कमियां :-

आर. जी. मैक्रिडीस ने तुलनात्मक राजनीति के परंपरागत उपागम की निम्न कमियों की ओर संकेत किया है -

(i) इसमें तुलनात्मक दृष्टि का नितांत अभाव है, अर्थात् इसमें एक या अनेक राष्ट्रों के शासन की संस्थाओं का वर्णन तो किया जाता है, और उनमें समानता तत्वों की तलाश भी की जाती है, परंतु उनसे जुड़ी प्रक्रियाओं की तुलना

के आधार पर राजनीतिक शक्ति के संगठन और प्रयोग की आलोचना नहीं की जाती।

(ii) इसमें वर्णन की प्रधानता रहती है, अर्थात् शासन की संस्थाओं की संरचना को प्रमुखता दी जाती है, उनके ऐतिहासिक विकास और कानूनी स्थिति पर विचार किया जाता है, परंतु राजनीतिक प्रक्रिया और राजनीतिक व्यवहार का विश्लेषण नहीं किया जाता।

(iii) इसमें गतिशील तत्वों की उपेक्षा की जाती है, अर्थात इसमें संविधान की धुरी व्यवस्थाओं को प्रमुखता दी जाती है जो प्रायः स्थिर रहती है, राजनीति के जो तत्व परिवर्तन और संतुलन की स्थितियों के लिए उत्तरदायी हैं जैसे- लोकमत, हित-समूह इत्यादि का सूक्ष्म विश्लेषण नहीं किया जाता।

(iv) इसमें प्रस्तुत विषय का विस्तृत निरूपण तो किया जाता है, परंतु ऐसे सामान्य नियम स्थापित नहीं किए जाते जो तुलनात्मक अध्ययन के आवश्यक अंग हैं।